Teaching Methods of Home Science

- गृह विज्ञान की शिक्षण-विधियाँ -

एक अध्यापिका चाहे कितना अधिक अनुभव करे कि आधुनिक युग में गृह-निर्माण के निमित्त गृह-विज्ञान बहुत ही महत्वपूर्ण विषय है और छात्राओं के पाठ्यक्रम में इसको यथायोग्य स्थान मिलना चाहिए, चाहे वह कितनी भी गम्भीरता से गृह-निर्माण विषयों के चुनाव और इसके पाठ्यक्रम की व्यवस्था करे, परन्तु फिर भी वह अपने वास्तविक कार्य से बहुत दूर है। उसका असली कार्य है— अध्यापन। किसी भी अध्यापिका को अपने विषय का चाहे पूर्ण ज्ञान हो, अनुसंधान के प्रति चाहे विशेष प्रेम हो, अपने ज्ञान को तरुण (up to-date) बनाये रखने के लिए उसके पास चाहे पर्याप्त साधन हो, परन्तु फिर भी यह आवश्यक नहीं है कि वह एक कुशल अध्यापिका ही सिद्ध हो।

गृह-विज्ञान छात्राध्यापिका को अध्यापन कार्य में निपुण बनाने के लिए सर्वप्रथम तो गृह-विज्ञान के उद्देश्यों को जानना आवश्यक है। जिसका विस्तृत उन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए उपलब्ध साधनों के अनुकूल जो भी मार्ग अपनाये जाते हैं उनको शिक्षण-विधियाँ कहा जाता है।

गृह-विज्ञान शिक्षण में निम्नलिखित विधियों का प्रयोग किया जाता है जो निम्न हैं—

1- व्याख्यान या प्रवचन विधि-

इस विधि के अनुसार कुछ पुस्तकों के आधार पर तथा शिक्षिका के पूर्व-अर्जित ज्ञान के आधार पर शिक्षिका द्वारा व्याख्यान दे दिया जाता है। छात्राएँ केवल श्रोता के रूप में बैठी रहती हैं और बिना परिश्रम किये ज्ञानोपार्जन करती हैं। आधुनिक शिक्षा-सिद्धान्तों और पद्धतियों के प्रचलन के पूर्व शिक्षण की यही प्रणाली थी परन्तु आजकल यह उच्च कक्षाओं में अधिकांशतः प्रयोग में आती है। माध्यमिक कक्षाओं में प्रवचन के साथ पुस्तक-पाठन की प्रथा भी प्रचलित है।

गुण– इस शिक्षण-विधि के निम्नलिखित लाभ हैं—

I- इसमें अपेक्षाकृत कम समय में शिक्षिका अधिक विषय का ज्ञान प्रदान करती है।

II- शिक्षिका को पाठ-योजना बनाने में अधिक समय व्यय नहीं करना पड़ता। उदाहरण एवं प्रयोग का केवल मौखिक वर्णन कर दिया जाता है।

III- अधिकांश शिक्षिकाओं को, विशेषतः नये अभ्यासियों को यह विधि बहुत रुचती है, क्योंकि यह बहुत सरल है। इसमें शिक्षिका को ज्ञान प्रदर्शन के लिए यथेष्ट अवसर मिल जाता है।

IV- यदि भाषण रुचिपूर्ण हुआ तो इसके द्वारा बालिकाओं के ध्यान को अपनी ओर आकर्षित करने में शिक्षिका को सरलता होती है और छात्राओं का एकाग्रचित बैठने का स्वभाव बन जाता है।

इतने गुण होते हुए भी आधुनिक शिक्षण-प्रणालियों में इसको कोई महत्वपूर्ण स्थान नहीं मिलता। विशेष रूप से गृह-विज्ञान जैसे व्यावहारिक विषयों के शिक्षण में और प्राथमिक और माध्यमिक कक्षाओं में यह विधि पूर्णतः अनुचित है। विद्यालयी कक्षाओं की बालिकायें की मनोवृत्ति चंचल होती है। उनके ध्यान को शिक्षा के आरम्भ से ही भाषण द्वारा विषय पर केन्द्रित नहीं किया जा सकता। अल्पवयस्क बालिकाओं के शिक्षण में वही विधि उत्तम सिद्ध होती है जिसमें- (1) अधिकाधिक ज्ञानेन्द्रियों का प्रयोग हो (2) बालिकाओं को क्रियाशील होने का अवसर मिले। (3) उनकी रुचि और रुझान के अनुकूल पाठ्य हो।

छात्राओं को गृह-सम्बन्धी वस्तुओं और क्रियाओं का स्पष्ट और शुद्ध ज्ञान हो, इसके लिए उन्हें प्रदर्शन दिखाना और क्रियाओं का अभ्यास कराना अति आवश्यक है। सिलाई, धुलाई, पाकशास्त्र, प्राथमिक चिकित्सा और गृह-परिचर्या आदि जैसे क्रियात्मक विषयों के शिक्षण में भाषण-विधि उपयुक्त नहीं है।

दोष- इस विधि के निम्नलिखित दोष हैं-

I- इसमें छात्राओं को यह अवसर नहीं दिया जाता कि वे शिक्षिका के व्याख्यान की आलोचना कर सकें। अतः इसमें सत्यासत्य-विवेचना विश्लेषणात्मक मनोवृत्ति का विकास नहीं हो पाता।

II- छात्राओं को अपने विचारों का प्रयोग करके नवीनता प्रदर्शित करने का अवसर नहीं मिलता।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय

III- समस्याओं को अपने ज्ञान के आधार पर हल करने का प्रोत्साहन न मिलने के कारण बालिकाओं की विचार-शक्ति का ह्रास होता है।

IV- इस विधि से शिक्षण किये जाने पर बालिकाओं का न तो सन्तुलित, और पूर्ण मानसिक विकास ही हो पाता है और न उनको पाठ्य-विषय की उचित रूप से शिक्षा ही मिल पाती है।

V- अधिकांशतः भाषण शुष्क और नीरस होते हैं, अतः छात्राओं की रुचि और मनोवृत्ति के विरुद्ध होते हैं।

VI- व्याख्यान विधि छात्राओं को निष्क्रिय बनाती है।

Sumel
20.09.2020

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं नारायण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

प्रयोग विधि —

इस विधि के अनुसार छात्राओं को कुछ निर्देश देकर कुछ उपकरण और सामग्री दे दी जाती है, जिससे वे स्वयमेव कार्य करके उसका सिर-तर निरीक्षण और परीक्षण करती हैं तथा परिणाम निकालती हैं। पाकशास्त्र शिक्षण में छात्राओं को किसी विशेष वस्तु के पकाने की विधि और उसके लिए आवश्यक सामग्री बता दी जाती है वे उसका अनुसरण करती हुई भोज्य वस्तु बनाती हैं। शिक्षिका अधिकांशतः प्रयोगात्मक पाठों में सहायक और निर्देशक के रूप में रहती है। इस प्रकार सिलाई, बुनाई, सफाई आदि का शिक्षण भी प्रयोग विधि द्वारा किया जाता है। इसमें छात्राएँ बताये गये उपयोगी उपकरणों का स्वयं प्रयोग करती हैं और उनसे क्रिया करके उनके प्रयोग का अभ्यास करती हैं। यह निश्चित ही है कि — जो वस्तु दूर से देखी जाय वह बालिकाओं के मन पर उतना प्रभाव नहीं डालती जितना कि वे अपनी ज्ञानेन्द्रियों द्वारा स्वयं अनुभव करती हैं। तात्पर्य यह है कि यदि छात्राओं को प्रेशर कुकर का लाभ और प्रयोग विधि सिखानी हो तो उनको उसका प्रदर्शन न देकर स्वयं प्रयोग करने का अवसर देना चाहिए। इससे उनका चित्त प्रसन्न होता है। हस्तकुशलता बढ़ती है। आत्म निर्भरता की भावना जागृत होती है और पठित या बतायी हुयी बात की परीक्षा का अवसर मिलता है। प्रयोगात्मक शिक्षण में छात्राएँ निरन्तर क्रियाशील रहती हैं जिससे वे चेतन और चुस्त रहती हैं और उनका मानसिक शारीरिक और नैतिक विकास होता है।

यह विधि शिक्षण में व्यक्तिगत और सामूहिक दो प्रकार के प्रयोगों के लिए यथेष्ट क्षेत्र है। यह एक व्यवसायिक विषय होने के कारण प्रयोगात्मक शिक्षण-विधि के द्वारा उचित रूप से पढ़ाया जा सकता है। क्रियात्मक और कलात्मक विषयों के लिए भाषण विधि की अपेक्षा यह विधि अधिक उपयोगी है। प्राथमिक चिकित्सा, शिशु-पालन, सिलाई, बुनाई, मरम्मत सफाई, सजावट और खाना पकाना आदि सब विषयों के शिक्षण का उद्देश्य - छात्राओं को इन क्रियाओं का अभ्यास कराना है। इन क्रियाओं की कुशलता प्राप्ति के लिए प्रयोग-विधि ही उपयोगी सिद्ध होती है।

प्रयोग-विधि के गुण -

प्रयोग विधि द्वारा शिक्षण किये जाने पर निम्नलिखित लाभ प्राप्त होते हैं।

I- छात्राएँ निरन्तर क्रियाशील रहती हैं। व्याख्यान या पुस्तक पाठन विधि के विपरीत इसमें छात्राएँ ज्ञानार्जन तथा अभ्यास के लिए स्वयं प्रयास करती हैं।

II- गृह विज्ञान विषय मनोरंजक और भावी जीवन के लिए उपयोगी बन जाता है।

III- छात्राओं में गृह विज्ञान के प्रति रुचि जाग्रत होती है।

IV- छात्राओं में क्रमबद्ध और वैज्ञानिक रीति से कार्य करने की आदत बनती है।

5- गृह-कार्य हीन स्तर से ऊपर उठकर उत्कृष्ट स्थान प्राप्त करता है।

6- कलात्मक या क्रियात्मक पाठों में छात्राओं को स्वतन्त्रता और व्यक्तित्व प्रदर्शन का यथेष्ट अवसर मिलता है।

7- छात्राओं की ज्ञानेन्द्रियाँ अधिकाधिक उत्तेजित रहती हैं जिससे उनका ध्यान निरन्तर विषय पर केन्द्रित रहता है।

8- छात्राएँ पठित और उल्लिखित तथ्यों की स्वयं परीक्षा कर लेती हैं।

9- छात्राएँ पाठ्य पुस्तक में बताये गये उदाहरणों या प्रयोगों को सार्थक रूप में देख लेती हैं।

10- छात्राओं को नापना, तोलना, चाट बनाना, आदि का समुचित अभ्यास हो जाता है।

11- छात्राओं में सजगता के साथ निर्देशों का अनुसरण करने की क्षमता जाग्रत होती है।

इन गुणों के विवरण से यह न समझना चाहिए कि यह शिक्षण की सर्वोत्तम पद्धति है और गृह-विज्ञान शिक्षण प्रत्येक कक्षा तथा प्रत्येक आयु की छात्राओं के लिए इसी विधि द्वारा होना चाहिए।

— प्रयोग विधि के दोष — इसके प्रयोग की भी सीमाएँ हैं। उनका निर्धारण निम्नलिखित दोषों के आधार पर करते है —

1- प्रयोग विधि के अनुसार प्रत्येक छात्र के लिए अलग-अलग उपकरण और समुचित सामग्री होनी चाहिए जो वर्तमान स्कूलों में स्थान और आर्थिक अभाव के कारण सम्भव नहीं है। अतः ये विधि महँगी पड़ती है।

2- इसमें प्रत्येक विषय में शिक्षण में समय भी बहुत लगता है और कई विषयों की भिन्न-2 कक्षाओं में पुनरावृति भी हो जाती है।

3- प्रारम्भिक कक्षाओं में छात्राएँ साधारणतः स्वयं प्रयोग करने की क्षमता भी नहीं रखती। यदि उनसे प्रयोग कराया जाय तो उपकरण और धन का नाश और दुरुपयोग ही होता है।

4- छात्राओं से वही प्रयोग कराये जाने चाहिए जो उनके मानसिक स्तर और रुचि के अनुकूल हो।

5- छात्राओं को व्यक्तिगत प्रयोगों का अवसर अवश्य दिया जाय, परन्तु वह परिस्थिती के अनुकूल हो और कला-निपुणता के लिए अभीष्ट हो।

21·01·2020

मीरा ... महाविद्यालय शिक्षण एवं ... संस्थान ... तारवा, बलिया